## सुकान्त भट्टाचार्य की कविता

# दियासलाई की तीली

**मैं दियासलाई की एक छोटी तीली**
**अति नगण्य, सबकी नज़र से ओझल**
**फ़िर भी बारूदकसमसाता है मुंह के भीतर**
**सीने में जल उठने को बेचैन एक सांस**

**मैं दियासलाई की एक छोटी तीली।**
**कैसी उथल-पुथल मच गई उस दिन**
**जब घर के एक कोने में जल उठी आग**
**बस, इसलिए कि नाफरमानी के साथ**
**बिन बुझाए फेंक दिया था मुझे**
**कितने घर जला कर किए खाक**
**कितने प्रसाद धूल में मिला दिए**
**मैंने अकेले ही-दियासलाई**
**की एक छोटी तीली।**

**कितने शहर कितनी रियासतें**
**कर सकती हूं मैं सुपुर्द खाक**
**क्या अब भी करोगेनाफरमानी**
**क्या तुम भूल गये उस दिन की बात**
**जब जल उठे थे हम एक साथ**
**एक बक्से में**
**और चकित तुम-हमने सुना उस दिन**
**तुम्हारे विवर्ण मुख से एक आर्त्तनाद।**

**हमारी बेइन्तहा ताक़त का एहसास**
**बार-बार करने के बावजूद**
**तुम समझते क्यों नहीं**
**कि हम क़ैद नहीं रहेंगे तुम्हारी जेबों में**
**हम निकल पड़ेंगे, हम फैल जायेंगे**
**शहरों कस्बों गांवों-दिशाओं से**
**दिशाओं तक।**

**हम बार-बार जले नितान्त उपेक्षित**
**जैसा कि जानतेही हो तुम**
**तुम्हें बस यही नहीं मालूम**
**कि कब जल उठेंगे हम**
**आखिरी बार के लिये**

**( मूल बंगला से अनुवादः नील कमल )**

# हिन्दु फ़ासीवाद और मीडिया

**भगतसिंह** के जन्म दिवस के मौके पर पाक्षिक अखबार नागरिक द्वारा ''हिन्दु फ़ासीवाद और मीडिया'' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान में 27 सितम्बर को आयोजित इस सेमिनार की शुरूआत जर्मनी के क्रांतिकारी कवि बर्टोल्ट ब्रेख्त के गीत ''वो सब कुछ करने को तैयार....'' से की गई।

सेमिनार में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए वरिष्ठ लेखक विष्णु नागर ने बीसवीं सदी में जर्मनी और इटली में हुए फ़ासीवादी उभार की विवेचना करते हुए इसकी तुलना हिन्दू फ़ासीवादी संगठन आरएसएस के उभार से की। उन्होंने कहा कि हिन्दु फासिस्ट तार्किक-वैज्ञानिक चिंतन को कुचल देना चाहते हैं। दाभोलकर, पनसारे के बाद कन्नड़ विद्वान कलबुर्गी की हत्या इसका सीधा प्रमाण है।

कवि एवं लेखक नीलाभ ने कहा कि मीडिया के द्वारा लोगों के दिमागों को नियंत्रित किया जा रहा है। बड़े चैनलों एवं अखबारों पर एकाधिकारी पूंजीवादी घरानों का नियंत्रण है। एकाधिकारी पूंजीवादी घरानों ने ही मोदी को प्रधानमंत्री बनावाया और अब मोदी इन एकाधिकारी घरानों के हितों को आगे बढा रहे हैं।

इस मौके पर प्रो. चमन लाल ने कहा कि आज टेलीविजन चैनल खुलकर अंधविश्वास का प्रचार कर रहे हैं। एकाधिकारी पूंजी द्वारा संचालित मीडिया की भूमिका बेहद घृणित हो चुकी है। उन्होंने भगत सिंह के लेख ''साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज'' में कही बातों का जिक्र किया मज़दूर-किसान जनता के वर्ग के आधार पर संगठित होने का आह्वान किया।

प्रगतिशील लेखक शम्सुल इस्लाम ने कहा कि जस्टिस श्री कृष्णा कमेटी ने साफ़ कहा है कि 1993 में मुंबई में हुए विस्फ़ोट उससे पूर्व महाराष्ट्र में हुए दंगों की प्रतिक्रिया स्वरूप थे और इन दंगों के लिये शिवसेना और आरएसएस के लोग सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। इसके बावजूद मुम्बई विस्फ़ोटों के लिये जिम्मेदार ठहराकर याकूब मेमन को फ़ासी पर लटका दिया गया जबकि दंगों के लिये जिम्मेवार शिवसेना आरएसएस के लोग आज़ाद घूम रहे हैं। मीडिया इस पर मौन है।

समयांतर पत्रिका के संपादक पंकज बिस्ट ने पूंजीवादी आर्थिक संकटों के फ़ासीवादी उभार के साथ संबंधों की विवेचना की और कहा कि पूंजीवादी व्यवस्था का ध्वंस ही एकमात्र विकल्प है। फ़ासीवादी के खिलाफ़ संघर्ष एकाधिकारी पूंजी के खिलाफ़ संघर्ष से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। यही एकाधिकारी पूंजी मीडिया को भी संचालित कर रही है।

सेमिनार में कवि एवं पाणिनी आनंद ने अपने वक्तव्य में मीडिया संस्थानों में काम कर रहे पत्रकारों की सीमाओं को बेबाक तरीके से उज़ागर किया। उन्होंने कहा कि हिन्दु फ़ासीवादियों द्वारा कलबुर्गी की हत्या पर मीडिया एकदम मौन रहता है जबकि इंद्रानी मुखर्जी प्रकरण की कवरेज दिन-रात दिखाई जाती है। उन्होंने क्रांतिकारी संगठनों के बिखरे रहने की आलोचना की ओर एकजुट होने का आह्वान किया।

नागरिक प्रतिनिधि कमलेश ने समापन वक्तव्य में कहा कि आज भारत में एकाधिकारी पूंजी और हिन्दु फ़ासीवादियों का गठजोड़ कायम हो चुका है। इसी गठजोड़ का परावर्तन मीडिया में साफ़ नज़र आता है। आज सोशल मीडिया वाट्स एप, फ़ेस बुक पर बड़े पैमाने पर मुसलमानों के खिलाफ़ नफ़रत फैलाने का गंदा अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि फ़ासीवादियों के पास समाज की समस्याओं का कोई समाधान नहीं है। ये सच के खिलाफ़ हैं, इसीलिए जर्मनी, इटली, स्पेन...जहां कहीं भी इनका उभार हुआ, बहुत जल्द ही जनता ने इन्हें नकार दिया। आज हिन्दु फ़ासीवादियों के खिलाफ़ आक्रामक तरीके से प्रचार-भण्डाफ़ोड की कार्रवाहिया करने की जरूरत है।

सेमिनार में इंकलाबी मज़दूर केन्द्र के नगेन्द्र, इफ्टू के मृगांग, प्रगतिशील महिला एकता केन्द्र की अध्यक्ष शीला शर्मा, मोर्चा पत्रिका के गोपाल जी, परिवर्तनकामी छात्र संगठन के दीपक, सामाजिक कार्यकर्ता नवाब खान...इत्यादि ने भी अपनी बात रखीं।

सेमिनार के अंत में सर्वसम्मति से तीन प्रस्ताव-फ़ासीवाद के खिलाफ़ संघर्ष का संकल्प, एफ़टीआईआई के छात्रों के संघर्ष का समर्थन एवं कन्नड़ विद्वान कलबुर्गी की हत्या का विरोध-लिये गये। अंततः क्रांतिकारी गीत ''वो सुबह हमीं से आयेगी के साथ इस विचारोत्तेजक सेमिनार का समापन हुआ।

**-रोहित**

# ''माननीय'' मुलायम सिंह को बैन किया जाये

**लाल** टोपी पहनकर समाजवाद को बदनाम करने वाले, अपने को समाजवादी कहने और लिखने वाले, मुलायम सिंह कौन-से समाजवादी हैं और कौन से समाजवाद की बात करते हैं? यह तो आज तक हमारी समझ में नहीं आया। लेकिन आये दिन बलात्कारियों के पक्ष में ब्यान देने वाले ये समाजवादी रूस या चीन वाले समाजवादी तो कतई नहीं हैं। हां, ये समाजवाद की नेमप्लेट लगाकर, लाल टोपी पहनकर समाजवाद के नाम से रोटी जरूर तोड़ रहे हैं। अरे नहीं-नहीं, ये तो बहुत कम करके आंकना हो जायेगा। वे समाजवाद के नाम से अपने महल बना व भर रहे हैं। उनका यह कहना कि ''गैंग रेप करना संभव नहीं है, यह प्रेक्टिकल नहीं है। अक्सर ऐसा होता है कि अगर एक आदमी रेप करता है, और....अगर चार भाई होते हैं तो चारों का नाम लिया जाता है।'' इससे पहले भी ''माननीय'' मुलायम सिंह बलात्कार के ही मामले में ''लड़के हैं, लड़कों से गलती हो जाती है'' जैसा महिला विरोधी बयान दे चुके हैं। जिसकी निन्दा सिर्फ़ महिलाओं ने नहीं बल्कि विपक्ष व अन्य पार्टियों ने भी की थी। ज़रा गौर करें कि क्या महिलाओं के संबंध में इस तरह की सोच रखने वाले मुलायम सिंह संसद में बैठे बलात्कारियों व बलात्कार जैसे अपराधों से घिरे नेताओं, सांसदों, विधायकों मंत्रियों-संत्रियों का पक्ष नहीं ले रहे हैं। ऐसा करके वे बलात्कारियों के हौंसले नहीं बढा रहे हैं, जो पहले से बुलंद हैं और महिलाओं के बचाव में आये किसी भी शख्स की हत्या तक कर दे रहे हैं। मुलायम सिंह केवल उन अपराधियों की ओर से प्रवक्ता बन कर नहीं बोल रहे हैं बल्कि उन मंत्रियों-संत्रियों का भी पक्ष-पोषण कर रहे हैं जो संसद और विधान सभाओं में बैठे हैं। क्या इन्हीं विचारों व उनका प्रदर्शन करने के कारण, संविधान द्वारा महिलाओं को दिये गये समानता व सम्मान के अधिकार का उल्लंघन किये जाने के कारण ''माननीय'' मुलायम सिंह को प्रतिबंधित या बैन नहीं कर दिया जाना चाहिए। क्योंकि बी.बी.सी. द्वारा बनाई गई डॉक्यूमेन्टरी फिल्म 'इंडियाज डॉटर' को यही कहकर प्रतिबंधित कर दिया गया कि उसमें बलात्कारी का इन्टरव्यू दिखाया गया है जिसमें बलात्कार के अपराधी के विचारों को भी विस्तार से दिखाया गया है, जो कि महिला विरोधी हैं।

राज्य के तथाकथित बड़े नेताओं द्वारा इस तरह के बयान अपराधियों पर पुलिस की कार्रवाई को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। एक अपराधी के बयान के कारण भारत सरकार एक फ़िल्म को बैन कर देती है, जबकि उसी तरह के बयान पर नेताओं को खुला छोड़ देती है, अगले बयान देने के लिए। ''माननीय'' मुलायम जी कहते हैं कि उत्तर प्रदेश में उसकी आबादी के हिसाब से अन्य राज्यों से कम अपराध होते हैं, जबकि असल में सरकारों द्वारा अपराध कम या ज्यादा कह कर अपराधों पर परदा डाला जाता रहा है। अपराधों पर परदा डालने के बजाय राज्य व केन्द्र सरकारों को अपराधियों व अपराधों पर लगाम लगाने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये। महिलाओं यानी आधी आबादी के संबंध में यह विचार राज्य के पूर्व मुखिया व वर्तमान मुख्यमंत्री के पिता हैं, जो कि एक ''राजनीतिक'' व्यक्ति कहलाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके अन्य नेताओं, मंत्रियों व राज्य की आम जनता किस तरह इन विचारों से लैस होगी इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

इस तरह के अपराधों के संबंध में लगभग सारी ही केन्द्र व राज्य सरकारों ने आज कल एक और तरीका अपनाया हुआ है-मुआवज़ा। क्या मुआवज़ा देने से किसी भी अपराध की गंभीरता को कम किया जा सकता है? यह भी एक सवाल है जिस पर सोचा जाना चाहिए। इसके अलावा महिलाओं पर की जाने वाली अभद्र टिप्पणियों व संविधान द्वारा दिये गये अधिकारों को छीनना या उनका अपहरण करना अपराधों की श्रेणी में आना चाहिए। महिलाओं के लिए असम्मानजनक टिप्पणी करने वालों को बैन किया जाना चाहिए। लेकिन यह सब करने की उम्मीद उन लोग़ों से नहीं की जा सकती, जो खुद इन अपराधों के भागी व हामी हों। न ही मुनाफ़े के इर्द-गिर्द घूमने वाली पूंजीवादी सरकारें इस काम को करने के लिए आगे बढेंगी। महिलाओं समेत देश का हर नागरिक छोटे से छोटा बच्चा भी अपने अधिकारों को पा सके इसके लिए मेहनतकश, मज़दूरों व महिलाओं को आगे आना होगा और इस सत्ताधारी, मुनाफ़ाखोर पूंजीपति वर्ग से संघर्ष कर अपने सम्मानपूर्ण जीवन के अधिकार को छीनना होगा।

**-हेमलता**


## घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

**आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:**

**अन्य बिक्री केन्द्र :**

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. हेम बुक डिपो, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब